

अनुसंधान सलाहकार समिति की 52वीं बैठक की कार्यवृत्त
(केरेउअवप्रसं, बहरमपुर, पश्चिम बंगाल में 28^{वीं} जनवरी, 2021-भार्युयाल मिट)

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर की अनुसंधान सलाहकार समिति की 52वीं बैठक 28वीं जनवरी, 2021 को भार्युयाल मोड के माध्यम से अनुसंधान व विकास की दिशा में की गई प्रगति के समीक्षार्थ डॉ. चिरंतन चट्टोपाध्याय, पूर्व-कुलपति, उत्तरबंग कृषि विश्वविद्यालय, कूचबिहार, पश्चिम बंगाल की अध्यक्षता में की गई हैं।

प्रारंभ में, डॉ. दीपेश पंडित, वैज्ञानिक-डी द्वारा नया अनुसंधान सलाहकार समिति (2021-23) के अध्यक्ष, सभी माननीय सदस्यों, वैज्ञानिकों एवं अन्य प्रतिभागियों को बैठक में स्वागत किया है।

डॉ. वी. शिवप्रसाद, निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर एवं सदस्य-संयोजक, आरएसी ने विस्तार और सीबीटी, प्रकाशन, वैज्ञानिक उपलब्धियों तथा अन्य संस्थान गत गतिविधियों सहित अनुसंधान पर प्रकाश डालें।

बैठक में उपस्थित सदस्यों की सूची अनुलग्नक - "क" में संलग्न है। कार्यसूची पर मदवार चर्चा प्रारंभ की गई थी।

डॉ. चिरंतन चट्टोपाध्याय, आरएसी-अध्यक्ष ने आपनी प्रारंभिक टिप्पणी में सभी प्रतिभागियों को नए साल की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने व्यक्त किया कि वह एक सक्रिय, अनुभवी और समर्पित टीम के साथ एक बार फिर बैठक का नेतृत्व करने का मौका मिलने से खुश हैं। उन्होंने कोविड-19 महामारी की स्थिति के दौरान भी संस्थान ने अपना ध्यान अनुसंधान व विकास पर केंद्रित रखा है और इसके लिए निदेशक और उनकी टीम की प्रशंसा की। उन्होंने भार्युयाल मंच के माध्यम से प्रतिभागियों से फलदायक बातचीत और सही प्रस्तुति के लिए अनुरोध किया।

मद संख्या 1. केरेउअवप्रसं, बहरमपुर में दिनांक 27वीं जनवरी, 2020 को अनुसंधान सलाहकार समिति की 51वीं बैठक की कार्यवृत्त की पुष्टि

अतः कोई भी टिप्पणी प्राप्त नहीं होने की स्थिति में कार्यवृत्त को पुष्ट माना गया।

मद संख्या 2. दिनांक 27वीं जनवरी, 2020 को आयोजित 51वीं अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक की सिफारिशों / निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा

अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक में लिए गए निर्णय पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा की गई एवं प्रगति संतोषजनक पाई गई।

मद संख्या 3. समाप्त परियोजनाओं की समीक्षा

समयावधि के अनुसार अवधि के दौरान पाँच परियोजनाएँ संपन्न हुईं। मूल अन्वेषक / सहयोगी अन्वेषक द्वारा प्रस्तुतिकरण के बाद आरएसी द्वारा निम्नलिखित सुझाव दिए गए थे :

1. पीआईबी 3610: शहतूत सुधार के लिए नव विकसित शहतूत जीनोटाइप का प्रारंभिक मूल्यांकन

आरएसी ने मूल अन्वेषक को लघु-सूचीबद्ध जीनोटाइप में उपज स्तर की जांच करने की सलाह दी क्योंकि मौजूदा नियंत्रणों पर पत्ती की उपज में सुधार लगभग 40% है। समिति ने FYT के लिए जीनोटाइप के आगे के मूल्यांकन के लिए भी सिफारिश की।

[कार्रवाई: डॉ. के. सुरेश, वैज्ञानिक-सी, एमबीजी]

2. पीआईबी 3576: उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार के लिए नए शहतूत जीनोटाइप का मूल्यांकन

आरएसी ने मूल अन्वेषक को सर्दियों के मौसम के दौरान छंटाई / मौसम संबंधी आंकड़ों को शामिल करने का सुझाव दिया जिसमें ठंडे क्षेत्रों में परिणाम के प्रभावी उपयोग के लिए शुरुआती अंकुरण देखा गया। चयनित जीनोटाइप (C-1 और C-11) को MLT के रूप में आगे मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

[कार्रवाई: डॉ. के. सुरेश, वैज्ञानिक-सी, एमबीजी]

3. एआईबी 3617: पूर्वी और पूर्वोत्तर के अत्यधिक उतार-चढ़ाव और मौसमी परिवर्तनशील जलवायु परिस्थितियों के लिए क्षेत्र विशिष्ट द्विध्रुवीय संकरों की पहचान

आरएसी ने मूल अन्वेषक को तार्किक निष्कर्ष के लिए नींव पार के अलावा मौजूदा डीएचएस के साथ नए बीएचपी-डीएच के प्रदर्शन की तुलना करने की सलाह दी। आगे, पत्ती: नव विकसित संकरों के लिए कोकून अनुपात निर्धारित किया जाना चाहिए। समिति ने ओएफटी के लिए बीएचपी-डीएच के आगे मूल्यांकन के लिए भी सिफारिश की हैं।

[कार्रवाई: डॉ. भी. लाक्ष्मण, वैज्ञानिक-डी, एसमबीजी]

4. एआईबी 3619: उच्च आनुवांशिक प्लास्टिसिटी वाले जीन पूल से रेशम कीट की जन्मजात नस्लों का विकास

अनुसंधान सलाहकार समिति ने कहा कि नव विकसित जन्मजात रेखाएं पैतृक शैयों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करती हैं और मूल अन्वेषक को अनुकूल मौसमों में भी जन्मजात बहुप्रज (28RY) संकर का मूल्यांकन जारी रखने का सुझाव दिया।

[कार्रवाई: डॉ. रंजिता देवी, वैज्ञानिक-वी, एसबीजी]

5. एआरपी 3605: एनपीवी प्रतिरोध से जुड़े डीएनए मार्करों के इंट्रोग्रेशन द्वारा विकसित की गई रेशम कीड़ों की नस्ल में डीएनए मार्करों का सत्यापन नस्ल के बड़े पैमाने पर फील्ड परीक्षण का उपयोग करता है। (डीबीटी: एसवीआरएल-कोडाथी, केरेअवप्रसं-मैसूर, केरेअवप्रसं-पांपोर व एनएसएसओ -बेंगलुरु)

आरएसी ने पाया कि पहचाने गए संकर संयोजनों को पूर्व और उत्तर पूर्वी क्षेत्र में किसानों के स्तर पर बड़े पैमाने पर परीक्षण के अधीन किया जाना चाहिए जैसा कि DBT द्वारा सुझाया गया था।

[कार्रवाई: डॉ. चद्रकांत एन, वैज्ञानिक-सी, एसबीजी]

मद संख्या 4. नई अनुसंधान परियोजना का मूल्यांकन

1. शीर्षक: पत्ती उत्पादकता और गुणवत्ता के लिए नए पहचाने गए शहतूत जीनोटाइप्स के अंतिम उपज ट्रायाल (FYT)

अवधि: 4 साल

मूल अन्वेषक द्वारा परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। महत्वपूर्ण समीक्षा / विचार-विमर्श के बाद, समिति ने निम्नलिखित सुझाव दिए:

अवलोकन / सुझाव: परीक्षण के तहत आशाजनक जीनोटाइप के महत्वपूर्ण जैव-रासायनिक लक्षणों को भी FYT के दौरान अनुमानित किया जाना चाहिए

निर्णय: नए परियोजना प्रस्ताव को मंजूरी दी गई और पीआई को सुझाव के अनुसार प्रस्ताव को संशोधित करने की सलाह दी गई।

[कार्रवाई: डॉ. यल्लप्पा एच, वैज्ञानिक-वी, पोषक पौधा]

मद संख्या 5. चालू अनुसंधान परियोजनाओं का समीक्षा

मुल अन्वेषक / सहकारी अन्वेषक द्वारा प्राद्योगिकी हस्तांतरण /विस्तार / प्रशिक्षण गतिविधियों के साथ मुख्य संस्थान और अधीनस्थ इकाइयों की 17 चालू अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति; आरएसी द्वारा समीक्षा की गई हैं और दिए गए सुझाव निम्नानुसार थे:

1. पीआईबी 3627: बेहतर शहतूत का विकास (मोरस एसपीपी) पॉलीक्लोनल बीज बाग के माध्यम से जीनोटाइप

परियोजना की प्रगति संतोषजनक और मील के पत्थर के अनुसार पाई गई। आरएसी ने परियोजना के पूरा होने के बाद भी आगे के उपयोग के लिए पॉलीक्लोनल बीज बाग के रखरखाव के लिए सुझाव दिया

2.पीआईई 02002 एसआई: लाल और लेटराइट मिट्टी के तहत शहतूत जीनोटाइप सी -9 के प्रदर्शन का मूल्यांकन

मुल अन्वेषक को बहु-स्थान परीक्षण करने की सलाह दी गई, जिसके बाद निष्कर्षित परियोजना में प्रस्तुत परिणामों के अनुरूप उचित / तार्किक निष्कर्ष के लिए उपलब्ध डेटा का जीजीई द्वािप्लॉट विश्लेषण किया गया।

[कार्रवाई: डॉ. के. सुरेश, वैज्ञानिक-सी, एमबीजी]

3. पीआरपी 08002 एमआई: शहतूत में प्रजनन रोग प्रजनन में उपयोग के लिए उम्मीदवार जीन आधारित पाउडर फंफूदी प्रतिरोध की पहचान। [एसविआरएल, कोडाथी के साथ सहोयागो परियोजना]

आरएसी ने विकसित मैपिंग आबादी के प्रभावी उपयोग के लिए सुझाव दिया और केरेडअवप्रसं-वहरमपुर में परियोजना की प्रगति संतोषजनक पाई गई।

4.पीआईबी 02007 एसआई: भारत के पूर्व व उत्तर-पूर्व राज्यों में शहतूत के पत्तों की दीर्घायु में सुधार

आरएसी ने कहा कि परियोजना को हाल ही में शुरू किया गया था और प्रगति संतोषजनक थी; और माइलस्टोन से चिपके रहने के लिए मुल अन्वेषक को सुझाव दिया गया है ।

5.पीपीए 02005 एसआई: सिंचित स्थिति में नव विकसित उच्च उपज वाली शहतूत किस्म (सी-2038) के लिए रिक्ति और पोषक खुराक का अनुकूलन।

मुल अन्वेषक ने परियोजना में उपचार को स्पष्ट किया। इस परियोजना को भी हाल ही में शुरू किया गया था और जो प्रगति हुई है वह संतोषजनक प्रतीत होती है।

6.पीआरपी 02003 एसआई: पूर्व व उत्तर-पूर्वी भारत में शहतूत की जड़ सड़न रोग के प्रबंधन पर अध्ययन।

आरएसी ने किसानों के साथ लक्षित परीक्षणों को पूरा करने के लिए मुल अन्वेषक को सलाह दी और महामारी की स्थिति के दौरान क्षेत्र परीक्षणों को जारी रखने के लिए बधाई दी हैं ।

7.एआईबी 3602: एमएस के माध्यम से रेशम कीट के तापमात्रा-सहनशील द्विप्रज संकर का विकास

आरएसी ने मुल अन्वेषक को सुझाव दिया कि केडीएच संकर में दर्ज की गई कम पुनरावृत्ति के लिए प्रशंसनीय कारणों का विश्लेषण करें। समिति ने केडीएच संकर के प्रदर्शन पर डेटा को अनुकूल और प्रतिकूल मौसमों के लिए अलग से प्रस्तुत करने की भी सलाह दी।

[कार्रवाई: डॉ. चद्रकांत एन, वैज्ञानिक-सी, एसबीजी]

8.एआईबी 02009 एमआई: रेशमकीट संकर 12- वाई x बीएफसी-1 का पूर्व व उत्तर-पूर्व भारत में प्राधिकरण परीक्षण

आरएसी ने कहा कि परियोजना को हाल ही में शुरू किया गया था और कहा गया था कि प्राधिकरण परीक्षण माइलस्टोन के अनुसार किया जाएगा।

9.एआईई 06002 एमआई: चयनित हॉटस्पॉट्स में अजैव तनाव के लिए सहिष्णुता के लिए द्विप्रज रेशमकीट आनुवंशिक संसाधनों का मूल्यांकन (केरेउअवप्रसं-होसुर के साथ कोल परियोजना)।

समिति ने देखा कि परियोजना हाल ही में शुरू की गई थी और केवल एक परीक्षण पूरा हुआ था।

10.एआईबी 01009 एमआई: व्यावसायिक शोषण के लिए प्राधिकरण के लिए किसानों के स्तर पर नए द्विप्रज डबल हाइब्रिड, टीटी-21 x टीटी-56 का मूल्यांकन (केरेउअवप्रसं-मैसूर के साथ सहयोगी परियोजना)।

प्राधिकरण परीक्षण हाल ही में शुरू किए गए थे और केवल एक फसल पश्चिम बंगाल में अग्रायणी मौसम के दौरान की गई है।

11. एआईटी 02008 एसआई: पूर्व व उत्तर-पूर्वी भारत के लिए उच्च आर्द्रता सहिष्णु रेशमकीट नस्लों / संकरों की पहचान

आरएसी ने मुल अन्वेषक को प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों के लिए त्रिचोग्रमा पैरासाइटोइड लक्षण वर्णन पर उत्पन्न जानकारी के लिए एनवीआईआर@ बेंगलूर से संपर्क करने की सलाह दी। समिति ने रेशमकीट में उच्च आर्द्रता सहिष्णुता के लिए आणविक मार्करों और केरेउअवप्रसं-वहरमपुर में उपलब्ध रेशमकीट आनुवंशिक संसाधनों की स्क्रीनिंग के लिए इसकी सराहना की।

[कार्रवाई: डॉ. रविराज, वैज्ञानिक-वी, एसबीजी]

12.एआईबी 02006 एमआई: अस्तित्व और रेशम उत्पादकता के लिए निस्तारी लाइनों का सुधार (केरेउअवप्रसं-मैसूर के साथ)

मुल अन्वेषक को निस्तारी की सभी लाइनों के लिए रिकॉर्ड किए गए सुधारों को अलग से प्रस्तुत करने की सलाह दी गई है। समिति ने महसूस किया कि हासिल की गई प्रगति अच्छी है।

[कार्रवाई: डॉ. रंजिता देवी, वैज्ञानिक-वी, एसबीजी]

13.एआईसी 02004 सीएन: श्लेष्मा रोग के साथ शहतूत की पत्ती से अलग कम आणविक भार पेप्टाइड की प्रभावकारिता का आणविक लक्षण वर्णन और आकलन (UNB सिलीगुड़ी के साथ)

आरएसी ने देखा कि परियोजना की प्रगति संतोषजनक और मील के पत्थर के अनुसार थी।

14.एआरपी 3630: नए कमरे का मूल्यांकन और रेशमकीट बिस्तर कीटाणुनाशक।

आरएसी ने मुल अन्वेषक को घर कीटाणुनाशक (निर्मूल और 5% ब्लीचिंग पाउडर) की मौसमी प्रभावकारिता की तुलना करने की सलाह दी।

15. आईआईटी 08005 एमआई: मार्कर असिस्टेड ब्रीडिंग लाइन्स-फेज II (एसबीआरएल- कोडाथी के सहयोगी) से विकसित बिडेनोवायरस प्रतिरोधी रेशम कीट संकर का विकास और मूल्यांकन।

समिति ने मुल अन्वेषक को पश्चिम बंगाल में मूल्यांकन के लिए विकसित बिडेनोवायरस प्रतिरोधी रेशम कीट संकर प्राप्त करने के लिए SBRL से संपर्क करने की सलाह दी।

[कार्रवाई: डॉ. के. राहुल, वैज्ञानिक-सी, रेशमकीट संरक्षण]

16. पीआरई02001 एसआई: बैरियर पद्धति शहतूत की पिंक मेली बग मैकनोलीकोकस हिर्सुटस (हरा) का प्रबंधन

आरएसी ने निष्कर्षित रिपोर्ट प्रस्तुत करते समय तार्किक निष्कर्ष निकालने के लिए डेटा का विश्लेषण करने की सलाह दी।

17. वीपीपी 05014 सीएन: शहतूत की पत्तियों और ग्रीन टी के साथ मिश्रित पेय से प्रसंस्करण पेय के प्रसंस्करण और उत्पादन का मानकीकरण। (केरेवो-बेंगलुरु, एएयू और टीटीटीआरआई-जोरहाट के साथ सहयोगी परियोजना।)

आरएसी ने परियोजना की प्रगति माइलस्टोन के अनुसार पाया है ।

वैज्ञानिकों ने ओएसटी, ओएफटी, विस्तार और प्रशिक्षण गतिविधियों के संबंध में प्रगति / उपलब्धियों को भी प्रस्तुत किया। समिति ने महामारी की स्थिति के बावजूद संतोषजनक प्रगति के लिए टीम की सराहना की।

आरएसी सदस्यों और अध्यक्ष की सामान्य टिप्पणियाँ:

जहां भी संभव हो, निष्कर्षित परियोजना (नों) के परिणाम के रूप में बौद्धिक गुणों को सुरक्षित रखें। सरकारी मानदंडों का पालन करने के लिए उत्पाद / प्रौद्योगिकी विकास में शामिल योगदानकर्ताओं के साथ व्यावसायीकरण की रॉयल्टी / एकमुश्त शुल्क को साझा करना और ऐसी संपत्तियों की पीढ़ी को प्रोत्साहित करने के लिए स्थापित दिशानिर्देशों पर विधिवत विचार करने की आवश्यकता है।

सामाजिक वैज्ञानिकों की मदद से विकसित / विकसित की जाने वाली उत्पाद / प्रौद्योगिकी के व्यवहारिक अर्थशास्त्र पर ध्यान दें।

नए विचारों / अवधारणाओं को विकसित करने के लिए संबंधित विशेषज्ञता में वरिष्ठों के साथ युवा वैज्ञानिकों की सहभागिता।

विशिष्ट संकर संयोजनों के लिए उपयुक्त बीज गुणन और बीज उत्पादन प्रणाली का विकास। एक सहयोगी परियोजना (पूर्वी और उत्तर पूर्वी भारत में नई विकसित नस्लों के बीज फसल के प्रदर्शन में सुधार) को एनएसएसओ-बेंगलोर और राज्य रेशम दफ्तर के साथ लिया जाना चाहिए, जो बीज कोकून उत्पादन और अंडा उत्पादकता पर ध्यान देने के साथ शुरू किया जाना चाहिए। किसी भी नई नस्ल (नों) का परीक्षण अधिमानतः स्थानों पर किया जाना चाहिए और उसी के प्रदर्शन में स्थिरता की जांच करने के लिए GGE बाय-प्लॉट विधि द्वारा डेटा का विश्लेषण किया जाना चाहिए।

विशिष्ट स्थितियों के लिए विकसित हो रही शहतूत किस्मों के लिए बहु-स्थान परीक्षणों को अपनाना।

श्री विकाश चन्द्र रॉय (रेशमकीट पालक के प्रतिनिधि-आरएसी) ने कहा कि किसानों को निस्तारी x सीएसआर नस्लों की तुलना में क्रॉसब्रिड, निस्तारी x SK6.7 से बहुत अधिक लाभ होता है।

श्री दीपक साहा (हथकरघा हस्तशिल्प और रेशमचाष-त्रिपुरा) ने अच्छे तकनीकी / वैज्ञानिक विचार-विमर्श का हिस्सा होने का इजहार किया। उन्होंने यह भी कहा कि त्रिपुरा की प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में बाइवोल्टाइज डबल संकर बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। इंप्रूव्ड क्रॉसब्रेड्स (12Y x BFC1) भी बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। डॉस-त्रिपुरा त्रिपुरा में इन संकरों के क्षेत्र परीक्षणों को बढ़ाएगा।

डॉ. अनाथ नाथ मंडल (डीओएस-पश्चिम बंगाल) ने निस्तारी के सुधार के लिए परियोजना शुरू करने के लिए CSRTI-बेरहामपुर के प्रयासों की सराहना की क्योंकि यह बंगाल के रेशमचाष के लिए अत्यधिक आवश्यक है।

डॉ. निर्मल कुमार (आरएसी सदस्य) ने कहा कि वैज्ञानिक प्रस्तुतियाँ विशेष रूप से एमएस आधारित रेशम कीट पालन के प्रयासों और बीएमएनपीवी प्रतिरोध अध्ययनों को प्रभावशाली बनाती हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों से पत्ती के निर्धारण पर विचार करने का अनुरोध किया: नए विकसित संकरों के लिए कोकून अनुपात और नई पैतृक नस्लों के लिए उपयुक्त गुणन प्रणाली विकसित करने का सुझाव दिया।

प्रोफेसर आर. वरथाराजन (आरएसी सदस्य) ने शहतूत रेशम के विभिन्न पहलुओं पर आरएसी और वैज्ञानिक चर्चा का हिस्सा होने पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने विभिन्न परियोजनाओं में हुई प्रगति की सराहना की।

डॉ. देवव्रत बसु (आरएसी सदस्य) ने आरएसी में नामांकन के लिए केंद्रीय रेशम बोर्ड का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि बी: सी अनुपात और संबंधित अर्थशास्त्र का अनुमान क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के दौरान लगाया जाना चाहिए। उन्होंने आगे विस्तार / प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रतिक्रिया का दस्तावेजीकरण करने के लिए ICT को अपनाने का सुझाव दिया।

डॉ. सोमनाथ भट्टाचार्य (आरएसी सदस्य) ने केरेउअवप्रसं-वहरमपुर की टीम द्वारा की गई वैज्ञानिक प्रस्तुतियों की सराहना की और महसूस किया कि सभी शोध परियोजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

डॉ. एस नायर (एनएसएसओ-बेंगलोर) ने वैज्ञानिक चर्चा का हिस्सा बनने के लिए अपनी संतुष्टि व्यक्त की। उन्होंने पूर्व व उत्तर-पूर्व क्षेत्र में पैतृक नस्लों के लिए गुणन चैनलों की योजना बनाने का सुझाव दिया।

डॉ. के. विजयन (आरसीएस-केंद्रीय कार्यालय-बेंगलोर) ने आरएसी बैठक का हिस्सा बनने पर प्रसन्नता व्यक्त की और एंड-यूजर्स के लिए उत्पाद / तकनीक विकसित करने का सुझाव दिया।

डॉ. शिवप्रसाद वी (निदेशक- केरेउअवप्रसं-वहरमपुर) ने आरएसी-अध्यक्ष और सभी सदस्यों को अनुसंधान व विकाश पहलुओं को उचित रूप से निर्देशित करने के लिए अपनी ईमानदारी से धन्यवाद दिया। इसके अलावा, उन्होंने एनएसएसओ-बेंगलोर और राज्य रेशम दफ्तर के साथ एक परियोजना शुरू करके पैरेंट्स रेशमकीट की नस्लों / संकरों की गुणन प्रणाली को कारगर बनाने की योजना पर प्रकाश डाला।

डॉ. चिरंतन चट्टोपाध्याय (आरएसी अध्यक्ष) ने सभी आरएसी सदस्यों को केरेउअवप्रसं-वहरमपुर के अनुसंधान व विकाश प्रयासों के लिए रचनात्मक सुझावों के लिए धन्यवाद दिया। आरएसी के सभी माननीय सदस्यों ने विचार-विमर्श में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया। आरएसी की सिफारिशों को गंभीरता के साथ लिया गया, जिसका विधिवत पालन किया गया, जिसने वर्षों में अनुसंधान कार्यक्रमों, उत्पादन में महत्वपूर्ण सुधार की दिशा में समृद्ध लाभांश का भुगतान किया है। आरएसी ने कोविड-19 की बाधाओं के बावजूद अनुसंधान और विस्तार में अपने प्रयासों को जारी रखने के लिए केरेउअवप्रसं-वहरमपुर और इसके निदेशक के नेतृत्व के वैज्ञानिकों के दल के प्रयासों को विधिवत स्वीकार किया। उन्होंने केरेउअवप्रसं-वहरमपुर को एक बार फिर से सीखने और नेतृत्व करने का अवसर प्रदान करने के लिए केंद्रीय रेशम बोर्ड को स्वीकार किया। उन्होंने अच्छी वैज्ञानिक प्रस्तुतियों, विकसित उत्पादों / प्रौद्योगिकी की रक्षा और व्यवसायीकरण और प्रगति के लिए वैज्ञानिकों की सराहना की।

[कार्रवाई: चिंतित वैज्ञानिक]

धन्यवाद प्रस्ताव के साथ बैठक समाप्त हुई।

अनुमोदित

(चिरंतन चट्टोपाध्याय)

अध्यक्ष, आरएसी, केरेउअवप्रसं-वहरमपुर

दिनांक : 29^{वीं} जनवरी, 2021

अनुलग्नक-I/ANNEXURE -I

अनुसंधान समिति (आरएसी) के 52^{वीं} बैठक में उम्मीदवारों की सूची 28.01.2021 पर वर्टुयल मीट में शामिल हुई

| # | नाम /Name | पदनाम/ Designation |
|-----|---|--------------------|
| 1. | डॉ. चिरंतन चट्टोपाध्याय, पूर्व-कुलपति, उत्तर बंग कृषि विश्वविद्यालय, कूचबिहार, पश्चिम बंगाल | अध्यक्ष |
| 2. | डॉ. सोमनाथ भट्टाचार्य, प्रोफेसर, वी.सि.के.भी., मोहनपुर, नदिया | सदस्य |
| 3. | प्रोफेसर देवव्रत बसु, कृषि विस्तार विभाग Dept. of Agril. Extension, वी.सि.के.भी., | सदस्य |
| 4. | प्रोफेसर आर. वरथाराजन, प्राणी विज्ञान विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय | सदस्य |
| 5. | डॉ. एस. निर्मल कुमार, पूर्व-निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर | सदस्य |
| 6. | डॉ. के. विजयन, वैज्ञानिक-डी, प्रतिनिधि निदेशक (तक), आरसीएस, के. का., केरेवो, बेंगालुरु | सदस्य |
| 7. | डॉ. के. सत्यनारायन, वैज्ञानिक-डी, प्रभारी व आरसीएस, के. का., केरेवो, बेंगालुरु | सदस्य |
| 8. | डॉ. एस. नायर, वैज्ञानिक-डी, प्रतिनिधि निदेशक (एनएसएसओ), के. का., केरेवो, बेंगालुरु | सदस्य |
| 9. | श्री अनाथनाथ मंडल, संयुक्त निदेशक, प्रतिनिधि राज्य रेशम दफ्तर, पश्चिमवंग | सदस्य |
| 10. | श्री विकाश चन्द्र रॉय, रेशमकीट पालक के प्रतिनिधि | सदस्य |
| 11. | श्री दीपक साहा, एसडीओ, प्रतिनिधि, हथकरघा हस्तशिल्प और रेशमचाष-त्रिपुरा | सदस्य |
| 12. | श्री वांटी देववर्मन, एसडीओ, प्रतिनिधि, हथकरघा हस्तशिल्प और रेशमचाष-त्रिपुरा | सदस्य |
| 13. | डॉ. शिवप्रसाद वी, निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर | सदस्य-संयोजक |

अनुपस्थित होनेवाला/ Absentee:

| | | |
|----|--|-------|
| 1. | निदेशक, राज्य रेशम दफ्तर मणिपुर | सदस्य |
| 2. | मह: सलौददीन मोमिन, प्रतिनिधि रेशम सूता कटाई करनेवाला | सदस्य |

बैठक में भाग लेनेवाले वैज्ञानिकों /उम्मीदवारों की सूची /List of scientists/ participants attended the meeting

| क्र. सं. | नाम/Name | पदनाम/Designation | स्थान/ Address |
|----------|-------------------------|---|-----------------------|
| 1 | डॉ. टी. दत्ता (बिश्वास) | वैज्ञानिक-डी, एसईईएम प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 2 | डॉ. वी. लक्ष्मणन | वैज्ञानिक-डी, रेशमकीट अनुभाग | |
| 3 | डॉ. एस. चट्टोपाध्याय | वैज्ञानिक-डी, जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग / पोषक पौधा | |
| 4 | डॉ. दीपेश पंडित | वैज्ञानिक-डी, पीएमसीई प्रभाग | |
| 5 | श्री गोपाल दास | वैज्ञानिक-डी, एसईईएम प्रभाग | |
| 6 | डॉ. एस. सरकार | वैज्ञानिक-डी, प्रशिक्षण प्रभाग | |
| 7 | श्री जाकिर होसेन | वैज्ञानिक-डी, क्षेरेउअके | कालिंपोंग, प.व. |
| 8 | डॉ.पी. कुमारेशन | वैज्ञानिक-सी, क्षेरेउअके | जोरहाट, असम |
| 9 | डॉ. मंजूनाथ, जी. आर. | वैज्ञानिक-सी, पीएमसीई प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 10 | डॉ.एन. चंद्रकांत | वैज्ञानिक-सी, रेशमकीट अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 11 | डॉ. शफी अफरोज | वैज्ञानिक-सी, एसईईएम प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 12 | डॉ. सुरेश के. | वैज्ञानिक-सी, पोशाक पौधा अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 13 | डॉ. वी. विजय | वैज्ञानिक-सी, मृदा विज्ञान अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 14 | डॉ. आर. महेश | वैज्ञानिक-सी, शस्य विज्ञान अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 15 | डॉ. पूजा मकवाना | वैज्ञानिक-सी, जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 16 | डॉ. के. राहुल | वैज्ञानिक-सी, रेशमकीट रोग विज्ञान अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 17 | डॉ. ए. पप्पाचन | वैज्ञानिक-सी, शहतूत रोग विज्ञान अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 18 | डॉ. मिहिर रभा | वैज्ञानिक-बी, रेशमकीट रोग विज्ञान अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 19 | डॉ. परमेश्वर नायक जे. | वैज्ञानिक-बी, प्रशिक्षण प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 20 | डॉ. रविराज वी. एस., | वैज्ञानिक-बी, एसबीजी अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 21 | डॉ. थंगजम रंजिता देवी, | वैज्ञानिक-बी, एसबीजी अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 22 | डॉ. दीपिका कुमार उमेश | वैज्ञानिक-बी, एमबीजी अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 23 | डॉ. यालप्पा हरिजन, | वैज्ञानिक-बी, एमबीजी अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |

| | | | |
|----|------------------------------|---------------------------------|-----------------------|
| 24 | श्री खुशरू आलम, | वैज्ञानिक-बी, क्षेत्रउअके | कोरापुट, ओड़ीशा |
| 25 | श्री पी. के. प्रसाद, | उप. निदेशक (कंप्यूटर) | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 26 | श्री सुब्रत सरकार, | व. तक. सहा., पीएमसीई प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 27 | श्रीमती एस. कर्मकार, | व. तक. सहा., पीएमसीई प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 28 | श्रीमती एम. चट्टोपाध्याय, | व. तक. सहा., पीएमसीई प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 29 | श्री शिनीवास | ल. अभियंता | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 30 | सुश्री. टी. नागा तेजा सिरीषा | आशुलिपिक, पीएमसीई प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 31 | सुश्री. सुरभि घोष, | जेआरएफ, जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |
| 32 | श्री सहदेव राय, | जेआरएफ,एसबीजी अनुभाग | केरेउअवप्रसं -बहरमपुर |

3054 words